केशवसृष्टि प्रकाशन

भारत जागो; विश्व जगाओ

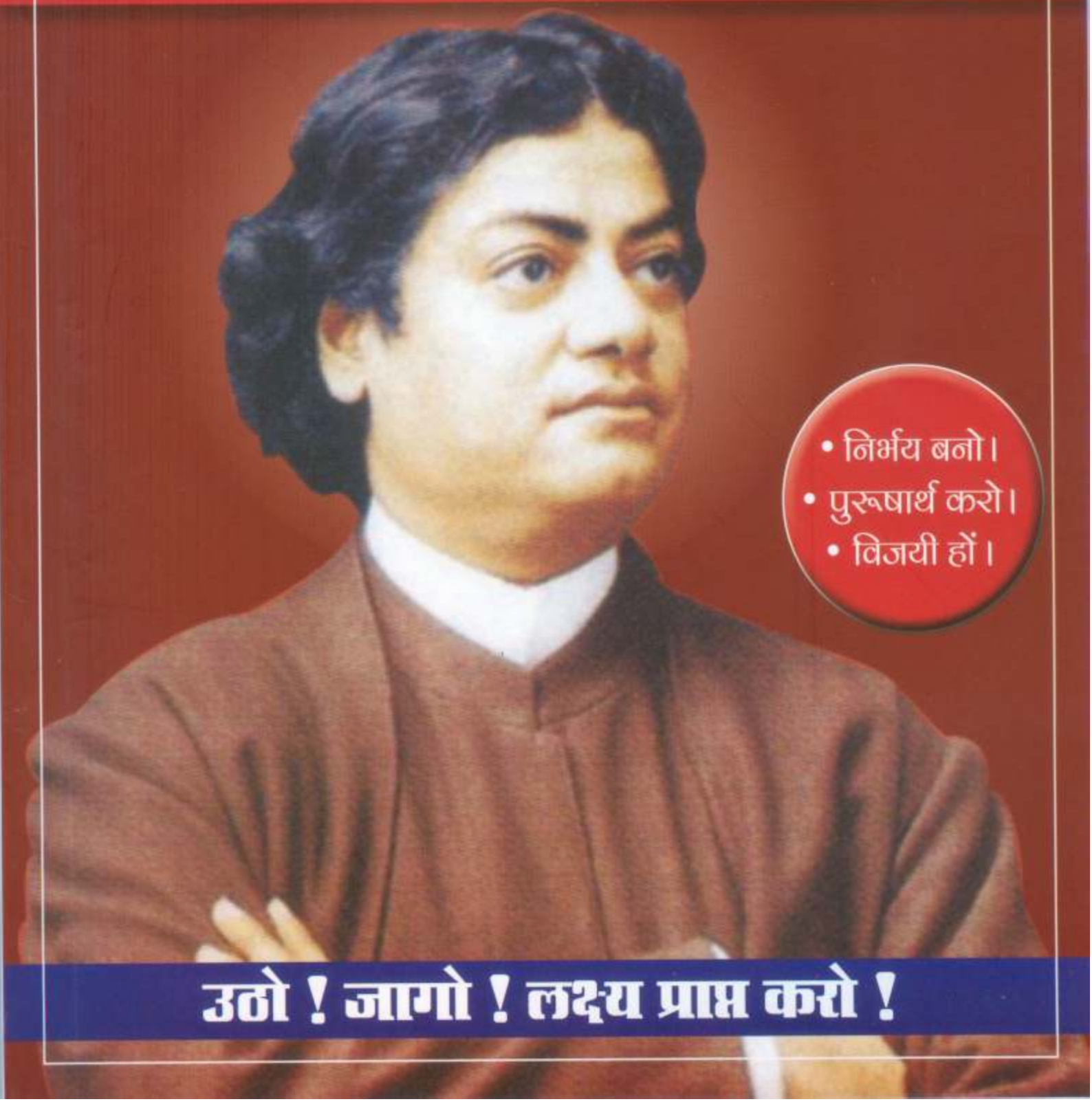

- निर्भय बनो।
- पुरूषार्थ करो।
- विजयी हों।

उठो ! जागो ! लक्ष्य प्राप्त करो !

संदीपसिंह

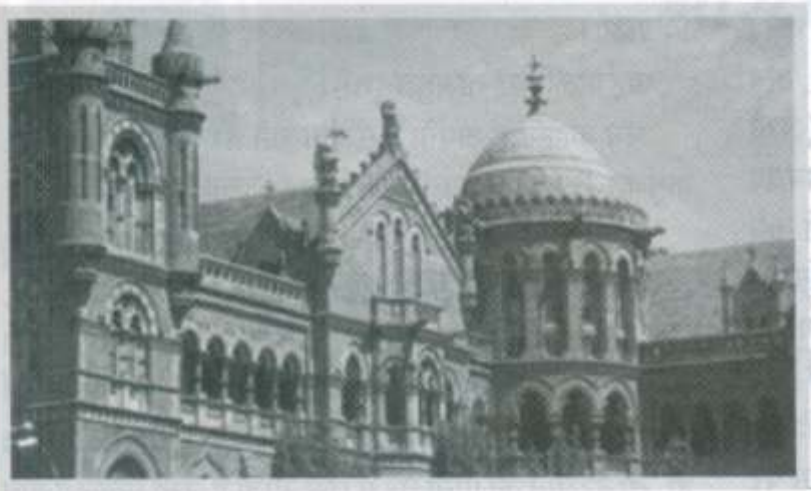

दो शहरों की कहानी

मुंबई नाम कोलियों (मछुआरों) की देवी मुम्बादेवी या महा-अम्बा के नाम से पड़ा है।

भारत में शहर और गांव की एक ग्राम देवी होती है ग्राम देवी निवासियों को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करती है। मुंबईवासियों को देवी द्वारा दी गई आत्मीय शक्ति मुंबई के जीवन में कई बार देखने को मिली है। शहर की आध्यात्मिक शक्ति को समझने के लिए हम मुंबई में घटी २६ जुलाई - २००५ की घटना और २९ अगस्त २००५ को अमेरिका में आए झंझावात कैटरीना का उदाहरण लेते है।

कैटरींना के कारण न्यू ओर्लिये में हुई वर्षा १८ इंच
मुंबई में हुई वर्षा. ३७.१ इंच
न्यू ओर्लियेन्स की जनसंख्या. ४८४, ६७४
मुंबई की जनसंख्या. १२, ६, २२, ५००
कैटरीना के ४८ घंटों के भीतर न्यू ओर्लिये में हुई मौतें- १००
बारिश के ४८ घंटों भीतर मुंबई में हुई मौतें - ३७
न्यू ओर्लिये में सुरक्षित स्थान पर लाए गए लोगों की संख्या - पूरा शहर
मुंबई में सुरक्षित स्थान पर लाए गए लोगों की संख्या १०,०००
न्यू आर्लिये में गोलीबार, लूट और हिंसा के मामले - अनगिनत
मुंबई में गोलीबारी, लूट और हिंसा के मामले - एक भी नहीं
यूएस सेना को न्यू ओर्लिये पहुँचने में लगा समय - ४८ घंटे
भारतीय सेना और नौसेना को मुंबई पहुंचने मे लगा समय - १२ घंटे
४८ घंटे बाद की स्थिति - न्यू ओर्लिय को अब भी राहत, सेना और बिजली का इंतजार था।
४८ घंटे बाद की स्थिति-मुंबई वापस अपने पैरों पर खड़ी थी और जनजीवन सामान्य हो चुका था।
यूएसए-दुनिया का सबसे विकसित राष्ट्र

भारत-विकासनशील राष्ट्र

लंबे समय तक कारों और बसों में फंसे सैकड़ो लोगों की सहायता के लिए मुंबई के नागरिक आगे आए। झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले भी सहायता कार्य में पीछे नहीं रहे। ऐसे मुंबईकरों

की अनेक कहानियाँ हैं जिन्होंने बुजुर्गो की मदद की और रस्सियों का सहारा लेकर दूसरों को संकट से उबारने के लिए गहरे पानी में गए। आपदाओं के समय में मानव का श्रेष्ठ स्वभाव प्रकट होने का यह अनुपम उदाहरण था। और भारत सचमुच अपनी भावनाओं का परिचय दे रहा था। अनेक लोग बिस्किट, पानी, चाय, केले और जो भी वे कर सकते थे वह सब लेकर सड़कों पर निकल आए और घंटों तक भूखे-प्यासे, रास्ते में फँसे हुए लोगों की मदद की। जल प्रलय की संपूर्ण कहानी का यह सब से हृदयस्पर्शी हिस्सा था जो आपसी भाईचारे और परस्पर सहयोग में हमारी आस्था को बार-बार सामने लाता है।

'द हिन्दू' की कल्पना शर्मा ने लिखा था। ''मुसीबत से घिरे लाखों नागरिकों को संबल मिला तो उन अनजाने परोपकारी, साधारण लोगों का, जिन्होंने निश्चित किया था कि वे तमाशबीन बनकर दूसरों को कष्ट झेलता नहीं देखेंगे. इसीलिए २६ जुलाई को जब ट्रेनें, थम गई, सड़कों पर बाढ़ आ गई और लाखों नागरिक बसों, ट्रेनों, कारों, ऑटोरिक्शा में फँस गए थे, तो कई लोग सड़कों पर कमर तक पानी में असहाय होकर राह तलाश रहे थे, ऐसी स्थिति में स्त्री, पुरुष और यहाँ तक कि बच्चे भी मानो देवदूत बनकर खाना और पानी लेकर उनकी सहायता के लिए पहुँच गए। लोगों ने अजनबियों के लिए अपने घरों के द्वार खोल दिए शौचालय इत्यादि का प्रबंध किया, उन्हें कुछ गर्म खाना, पानी दिया और कपड़े सुखाने की व्यवस्था तक की, छोटे लड़कों ने अपनी जान जोखिम में डालकर बसों और ट्रेनों में फंसे हुए यात्रियों को बचाया। लोगोनें स्वयं प्रेरणा से पानी की बोतलें, बिस्किट, फल, वड़ा पाव खरीदकर संकट ग्रस्त रोगों में वितरित किया। सप्ताहभर वर्षा के कहर से उबरने का प्रयास कर रहे शहर में मानवता की ऐसी कहानियों का क्रम थमा नहीं।''

इसके विपरीत न्यू ओर्लिय में जो हुआ उसने निर्ममता की हदें पार कर दीं लूटपाट, बलात्कार, हत्या तथा अनाचार के दृश्य विश्व के सबसे धनवान देश के एक बड़े शहर में आम था। हर किसी को इसने चौका दिया। एक महाशक्ति के पास उपलब्ध सारे संसाधनों के बावजूद न्यू ओर्लीन्स में फैली अराजकता को रोका नहीं जा सका।

झंझावात कैटरीना की तबाही के बाद यूएसए में चर्चा थी 'वंश' 'वर्ग' और 'गरीबी' की भारत और मुंबई में 'भावना' और 'पूर्व स्थिति 'में लौटने' की बातें हो रही थीं! सन २००५ ने अमेरिकी और भारतीय संस्कृति की व्यक्तिगत और रचनागत, दोनों कमजोरियों व शक्तियों को उजागर किया।

मुंबईवासियों के लिए यह आध्यात्मिक शक्ति कोई नयी बात नहीं है। १५० वर्ष पूर्व मुंबई ७ द्वीपों का समूह था। उस समय माहिम से आगे मुंबई नहीं थी और न ही पश्चिमी उपनगर थे। माहिम और बांद्रा को जोड़ने के लिए कोई पुल नहीं था। इसे बनाने का अनुमानित खर्च रु. १००,००० था। उस वक्त ये बहुत बड़ी राशि थी और सरकार के पास इतना बजट नहीं था। जब सर जमशेदजी जीजीभाय की पत्नी लेडी अवाबाई जमशेदजी जीजीभाय ने इस बारे में सुना तो उन्होंने इसकी आवश्यकता महसूस की। १५० वर्ष पहले उन्होंने अपनी दूरदर्शिता से यह देख लिया था कि मुंबई माहिम से आगे जाएगी जहाँ आज १० मिलियन (१करोड़) लोग रहते हैं।

इस स्वप्न को साकार करने के लिए उन्होंने अपनी निजी संपत्ति से पूरी पुल की लागत राशि दान कर दी। सिर्फ शर्त यह थी कि सरकार इस पुल का उपयोग करने वाले से कोई पथकर (टोल टॅक्स) नहीं वसूलेगी। आरंभ में अनुमानित लागत रू, १००, ००० थी लेकिन १८४२ में जब काम शुरू हुआ तब लागत बढ़ गई। जब शुरुआती धनराशि समाप्त हो गई और काम तकरीबन रुकने ही वाला था, तब उन्होंने फिर से अपनी उदारता का परिचय देते हुए और रू. ५७,००० का दान दिया।

'भारत का समृद्धिचक्र' पुस्तक से साभार